भाग 2

कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

(द्वितीय भाषा)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फ़रवरी 2007 फाल्गुन 1928

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
दिसंबर 2008 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जून 2011 आषाढ़ 1933
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
नवम्बर 2014 अग्रहायण 1936
मई 2016 वैशाख 1938
दिसंबर 2016 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941

PD 30T RPS

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा वी.पी.एस. इंजीनियरिंग इम्पैक्स (प्रा.) लि., बी-4, सेक्टर 60, नोएडा - 201301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-657-8

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*बिबाष कुमार दास*
सहायक संपादक	:	*एम. लाल*
उत्पादन सहायक	:	*ओम प्रकाश*

आवरण, सज्जा एवं चित्रांकन
जोएल गिल

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन कर सकेंगे। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम

अग्रवाल की विशेष आभारी है। पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए परिषद उनके प्राचार्यों एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। परिषद माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक

नयी दिल्ली — राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान

20 नवंबर 2006 — और प्रशिक्षण परिषद्

अध्यापक बंधुओं से

यह किताब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की सभी सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को बच्चे के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। भाषा की शिक्षा मातृभाषा से प्रभावित मात्र ही नहीं होती बल्कि वह द्वितीय भाषा कौशल की समृद्धि में भी लाभप्रद और सहायक सिद्ध होती है। इसी को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के हिंदी की सामान्य संरचनाओं की जानकारी को धीरे-धीरे उसकी विशिष्ट और विपुल संरचनाओं की जानकारी से जोड़ने की कोशिश इसमें की गई है। इसमें यथासंभव सहज और सरल भाषिक संरचनाओं वाले सरस और रोचक पाठों का चयन किया गया है। पाठों के चयन में हिंदी के महत्त्वपूर्ण रचनाकारों की बाल रचनाओं को शामिल कर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने-पढ़ानेवालों को हिंदी की समृद्ध साहित्य परंपरा के प्रति रुचि बढ़ाने की भी कोशिश है। पाठों की भाषा और विषयवस्तु न केवल महत्त्वपूर्ण है बल्कि अन्य विषयों के ज्ञान को भी अपने में समेटे हुए है, जो विद्यार्थियों की भाषा और साहित्य को पढ़ने-समझने और जानने-बताने की रुचि को बढ़ाने में सहायक होगी।

भाषा अध्ययन के लिए पिछली कक्षाओं में किए गए अभ्यासों और तरीकों को भी यथास्थान जारी रखने के साथ-साथ नए तरह से प्रश्न-अभ्यास भी बनाए गए हैं जिनके द्वारा विद्यार्थियों के भाषिक कौशल सहित संपूर्ण कौशल का पर्याप्त विकास हो सकेगा। अतः इस कक्षा में दिए गए पाठों एवं अभ्यासों को पिछली कक्षा के पाठ्यक्रम के साथ जोड़कर देखने की आवश्यकता है।

इसके अभ्यास में समझना, अभिव्यक्त करना, अवलोकन करना, विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना, समस्या सुलझाना, सृजनात्मकता, ज़िम्मेदारी, आत्मविश्वास, सजगता, अन्य विषयक समझ सहित भाषा की समझ को बढ़ाने पर भी ध्यान दिया गया है।

वर्ग पहेली, चित्र, नक्शे और तालिका आदि के प्रयोग द्वारा शब्दों के निर्माण व पहचान को बढ़ावा दिया गया है तथा अभ्यास करना, वर्णन-विश्लेषण करना और बहुभाषिकता को भाषा शिक्षण के लिए सहायक माना गया है।

विद्यार्थियों की भाषा शिक्षण की अपनी कुशलता और क्षमता सहित विद्यालयों और शिक्षकों के द्वारा उपलब्ध किए/कराए जानेवाले सभी संसाधनों सहित भाषिक परिवेश की सीमाओं और विशिष्टताओं को भी ध्यान में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक में ही व्याकरण की समझ उत्पन्न करने के लिए इससे संबंधित अभ्यास दिए गए हैं। पढ़ाने के दरम्यान अध्यापक बंधु संदर्भ अनुसार व्याकरणिक प्रयोगों को कक्षा की ज़रूरत के अनुसार स्वयं भी उपयोग कर सकते हैं।

विद्यार्थियों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को उसके आस-पास के परिवेश में ही विकसित करने हेतु समग्रत: पाठों व अभ्यासों का चयन और निर्माण किया गया है। भाषा शिक्षण के लिए अनिवार्य तरीकों का प्रयोग विद्यार्थियों और शिक्षकों के वैयक्तिक विकास स्तर पर निर्भर करता है। अत: आशा है इस पुस्तक का समुचित ढंग से उपयोग किया जाएगा। आपके आवश्यक सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *हिंदी शिक्षक,* निगम माध्यमिक स्कूल, कैलाश कॉलोनी, नयी दिल्ली

एच.बालसुब्रह्मण्यम्, *पूर्व सहायक निदेशक,* केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नयी दिल्ली

गोबिंद प्रसाद, *रीडर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

पूरन सहगल, *निदेशक,* मालव लोक संस्कृति अनुष्ठान, 'कृष्णायन' उषा गंज, मनासा, मध्य प्रदेश

बी.प्रमीला देवी, *हिंदी शिक्षिका,* जवाहर नवोदय विद्यालय, एच.सी.यू. कैम्पस, रंगा रेड्डी, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

मिथिलेश्वर, महाराजा हाता, कतिरा आरा, बिहार

राम प्रकाश टिकेकर, *प्रवाचक एवं विभागाध्यक्ष,* स्नातकोत्तर हिंदी शोध विभाग, कुवेंपू विश्वविद्यालय, शिमोगा, कर्नाटक

सी.ई.जीनी, प्रोफ़ेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आर-12, नेहरु एंकलेव, कालकाजी, नयी दिल्ली

श्रीशचंद जायसवाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आर-12, नेहरु एंकलेव, कालकाजी, नयी दिल्ली।

सदस्य-समन्वयक

संजय कुमार सुमन, *वरिष्ठ प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

नरेश कोहली, *प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक निर्माण में जिन लेखकों एवं कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है उसके लिए–राजपाल एण्ड संस, प्रतिभा प्रतिष्ठान, समाज शिक्षा प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, इंडियन फारमर्स फर्टिलाइज़र को–ऑपरेटिव लिमिटेड, प्रकाशन विभाग (सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार), डॉ. आलोक राय, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी साहित्य सम्मेलन (इलाहाबाद), ज्ञानदीप प्रकाशन (दिल्ली), शिक्षा–विमर्श (जयपुर), पार्थ बुक डिवीज़न (मुंबई), स्व. श्री गिरिजाकुमार माथुर की पत्नी श्रीमती शकुंत माथुर, अनुराग प्रकाशन (अजमेर, राजस्थान) और चकमक तथा एकलव्य (भोपाल) के प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए हम कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक, *डी.टी.पी. ऑपरेटर सह कॉपी एडीटर* कमल कुमार *और प्रूफ़ रीडर* कंचन शर्मा का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

पाठ-सूची

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।